‘भारतबोध का नया समय’ का लोकार्पण

‘न्यू एरा ऑफ इंडियननेस’ से परिचय कराती है पुस्तक : उदय माहुरकर

नई दिल्ली, 31 मार्च। देश के प्रख्यात पत्रकार एवं भारतीय जन संचार संस्थान, नई दिल्ली के महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी की नई पुस्तक ‘भारतबोध का नया समय’ का लोकार्पण गुरुवार को नई दिल्ली में किया गया। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारत सरकार के सूचना आयुक्त श्री उदय माहुरकर थे। समारोह की अध्यक्षता इंदिरा गांधी कला केंद्र के सदस्य सचिव डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने की एवं दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में वरिष्ठ आचार्य प्रो. कुमुद शर्मा मुख्य वक्ता के रूप में कार्यक्रम में शामिल हुईं। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नागेश्वर राव और वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक श्री अनंत विजय ने विशिष्ट अतिथि के रूप में समारोह में हिस्सा लिया।

‘भारतबोध का नया समय’ को ‘न्यू एरा ऑफ इंडियननेस’ बताते हुए भारत सरकार के सूचना आयुक्त श्री उदय माहुरकर ने कहा कि आजादी के तुरंत बाद भारतबोध की जो बात हमें करनी चाहिए थी, वो हमें 70 साल बाद करनी पड़ रही है। इस पुस्तक के माध्यम से राष्ट्रीयता की अलख जगाने की कोशिश की गई है। यह पुस्तक नए भारत से हमारा परिचय कराती है। एक ऐसा भारत, जिसका सपना स्वामी विवेकानंद जैसे राष्ट्रनायकों ने देखा था।

श्री माहुरकर के अनुसार मैकाले की शिक्षा पद्धति ने भारतीय विचारों को कुचलने का प्रयास किया। अपनी संस्कृति को लेकर लोगों में जो हीनताबोध उन्होंने भरा, इस पुस्तक के माध्यम से उसे दूर करने का प्रयास किया गया है। भारतीयता को हीनभावना से प्रस्तुत करने का प्रयास समाज के एक विशेष वर्ग द्वारा लगातार किया जा रहा है। यह पुस्तक ऐसे लोगों को भारतीयता और भारतबोध का सही अर्थ समझाने का प्रयास करती है।

भारत के नए रूप से कराया परिचय : डॉ. सच्चिदानंद जोशी

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के सदस्य सचिव डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने कहा कि इस पुस्तक के लेखक प्रो. संजय द्विवेदी पत्रकार, प्राध्यापक और प्रशासक का अद्भुत संगम हैं। ‘भारतबोध का नया समय’ में जहां पत्रकार का सटीक विवेचन और प्राध्यापक की सूझबूझ और समझदारी है, वहीं प्रशासक का चैतन्य भी इस पुस्तक में दिखाई देता है। भारत के उस रूप से पाठकों का परिचय लेखक ने करवाया है, जिसकी अभी तक हम सिर्फ कल्पना ही करते थे।

डॉ. जोशी ने कहा कि भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी भारतबोध के दर्शन होते हैं। वर्ष 2047 में जब भारत आजादी के 100वें वर्ष में प्रवेश करेगा, तो यह पुस्तक बौद्धिक रसद के रूप में युवाओं के हाथ में होगी। उन्होंने कहा कि इस प्रकार चिंतन करते हुए लिखना और उस लिखे हुए पर अमल करना बुद्धिजीवी समाज का दायित्व है।

आत्मचैतन्य से युक्त हो रहा भारत : प्रो. कुमुद शर्मा

दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में वरिष्ठ आचार्य प्रो. कुमुद शर्मा ने कहा कि प्रो. संजय द्विवेदी जब लिखते हैं, तो समय की नब्ज पर पूरी पकड़ रखते हैं। सामयिक युग की चिंताएं उनके लेखन को गति देती हैं। अपनी इस पुस्तक के माध्यम से देश की अस्मिता से वे हमारा परिचय कराते हैं। उन्होंने कहा कि अंग्रेजों ने जब भारत पर राज किया, तो हमारे सांस्कृतिक ढांचे को तोड़ने का प्रयास किया। उस दौर में यूरोप के संदर्भों में भारतीयता को परिभाषित किया जाता था। इस कारण जहां एक तरफ हम सांस्कृतिक विरासत से दूर होते चले, वहीं दूसरी तरफ अज्ञान का अंधकार बढ़ने लगा। इस पुस्तक के माध्यम से लेखक ने जड़ों से जुड़ी भारतीय चेतना को नया आकाश देने का कार्य किया है।

प्रो. शर्मा ने कहा कि आत्मचैतन्य से युक्त भारत में आज नए युग की शुरुआत हो रही है। हम भारतबोध के साथ नए भारत को गढ़ने की प्रकिया में हैं। सनातन सरोकारों को जोड़कर आज भारत का नेतृत्व हो रहा है। यह प्रत्येक भारतीय के लिए गर्व का क्षण है। उन्होंने कहा कि प्रो. द्विवेदी ने इस पुस्तक के द्वारा युवाओं को आसान और सरल शब्दों में भारतबोध का समझाया है।

संस्कृति और ज्ञान परंपरा को समझेंगे युवा : प्रो. नागेश्वर राव

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नागेश्वर राव ने कहा कि प्रो. संजय द्विवेदी की इस पुस्तक को मैंने 3 घंटे में पूरा पढ़ लिया। आज के जमाने में किसी पुस्तक को एक बार में बैठकर पूरा पढ़ जाना असंभव सा लगता है, लेकिन प्रो. द्विवेदी की पुस्तक आपको भारत की यात्रा पर ले जाती है। इस पुस्तक का विषय, भाषा शैली और प्रस्तुतीकरण अद्भुत है। उन्होंने कहा कि मुझे पूरा विश्वास है कि इस पुस्तक के माध्यम से युवा अपनी संस्कृति और ज्ञान परंपरा को जानेंगे। भारत को जाने बिना हम भारत के नहीं बन सकते। इस किताब में प्रस्तुत लेखों से भारत के गौरव की अनुभूति पूरे देश को हो रही है।

'राष्ट्र सर्वप्रथम' का चिंतन है पुस्तक : श्री अनंत विजय

वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक श्री अनंत विजय ने कहा कि इस पुस्तक में संजय द्विवेदी ने वर्तमान को साथ रखा है, लेकिन वे अपने अतीत को भूलते नहीं है। अतीत को साथ रखकर ही उत्कृष्ट रचना की जा सकती है। उन्होंने कहा कि हमारे सभी मनीषियों की चिंतनधारा में 'राष्ट्र सर्वप्रथम' रहा है। प्रो. द्विवेदी ने आम बोलचाल के शब्दों में उस चिंतनधारा को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है।

श्री विजय ने कहा कि किसी भी पुस्तक की पैकेजिंग से कुछ नहीं होता। आज जमाना कंटेंट का है। अगर पुस्तक पाठकों के साथ संबध स्थापित कर पाती है, तो उस किताब को सफल होने से कोई नहीं रोक

सकता। प्रो. संजय द्विवेदी की इस पुस्तक ने पाठकों के साथ रागात्मक संबंध स्थापित किया है, जो इसकी सफलता का प्रमाण है।

भारतीयता का एहसास होना जरूरी : प्रो. संजय द्विवेदी

इस अवसर पर पुस्तक के लेखक एवं भारतीय जन संचार संस्थान, नई दिल्ली के महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी ने कहा कि कोई भी किताब खुद अपना परिचय देती है। ये किताब आम आदमी के लिए लिखी गई है, जो भारत को जानना चाहता है। इस पुस्तक के माध्यम से हमारा प्रयास है कि लोगों को भारतीयता का एहसास हो। उन्होंने कहा कि भारत को जानने के लिए हमें कुछ प्रयास अवश्य करने चाहिए। जब आप भारत को जान जाते हैं, तो आप भारत से दूरी नहीं बना सकते।

प्रो. द्विवेदी ने कहा कि सही मायनों में आज भारत जाग रहा है और नए रास्तों की तरफ देख रहा है। आज भारत एक नेतृत्वकारी भूमिका के लिए आतुर है और उसका लक्ष्य विश्व मानवता को सुखी करना है। आज के भारत का संकट यह है कि उसे अपने पुरा वैभव पर गर्व तो है, पर वह उसे जानता नहीं हैं। इसलिए भारत की नई पीढ़ी को भारतबोध को समझने की जरूरत है।

कार्यक्रम में स्वागत भाषण इंदिरा गांधी कला केंद्र के डीन एवं विभागाध्यक्ष प्रो. रमेश चंद्र गौड़ ने दिया एवं संचालन कला केंद्र की सहायक सूचना अधिकारी सुश्री यति शर्मा ने किया।

Thanks & Regards

Ankur Vijaivargiya
Associate – Public Relations
Indian Institute of Mass Communication
JNU New Campus, Aruna Asaf Ali Marg
New Delhi – 110067
(M) +91 8826399822
(F) facebook.com/ankur.vijaivargiya
(T) https://twitter.com/AVijaivargiya
(L) linkedin.com/in/ankurvijaivargiya